साधन-शुद्धि पर जोर

रजि० नं० बी ४४४८

# हरिजनसेवक

दो आना

भाग १२ सम्पादक – किशोरलाल मशरूवाला अंक ७

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाअी देसाअी
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता० १८ अप्रैल, १९४८

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४; डॉलर ३

## विज्ञापनमें अशिष्टता

गांधी राष्ट्रीय स्मारक-निधिके मन्त्री आचार्य कृपलानीने थोड़े दिन पहले जो अखबारी बयान निकाला था, अुसमें अुन्होंने कहा था :—

"गांधीजीके नामकी दुहाअी देनेवाले खानगी फर्मोंके विज्ञापन अखबारोंमें पढ़कर मुझे बड़ा दुःख हुआ है। जाहिरा तौरपर वे गांधीजीको श्रद्धांजलि देनेवाले मालूम होते हैं, लेकिन अुनका असल मकसद फर्मोंकी खास चीजोंके विज्ञापनमें मदद पहुँचाना होता है। अक्सर जिन चीजोंका विज्ञापन दिया जाता है, वे अैसी होती हैं जिनके अिस्तेमालको गांधीजीने नुकसानदेह और देशभक्तिके खिलाफ माना होता। लेकिन अुन चीजोंके समाजमें अिस्तेमाल किये जाने पर भी खानगी नफेके लिअे की जानेवाली अुनकी बिक्रीके साथ गांधीजीका नाम जोड़ना ठीक नहीं है। यह मशहूर है कि गांधीजी विज्ञापनोंका विरोध करते थे और जिन पत्रोंके साथ अुनका सम्बन्ध था, अुनके लिअे अुन्होंने कभी कोअी विज्ञापन मंजूर नहीं किया। अिसलिअे गांधीजी जिन्हें नापसन्द करते थे अैसे मकसदोंके लिअे अुनके नामका दुरुपयोग करना कोअी श्रद्धांजलि नहीं है। गांधीजीको सबसे अुत्तम श्रद्धांजलि यही दी जा सकती है कि जिन आदर्शोंके लिअे वे जिये, अुनकी हम कदर करें और अुनको मूर्तरूप देनेके लिअे काम करें। मुझे आशा है कि व्यापारी-वर्ग मेरी अिस अपीलको मानेगा और अपने विज्ञापनोंमें गांधीजीके नामका अुपयोग नहीं करेगा।

"व्यापारी-वर्गकी और जनताके दूसरे सब हिस्सोंकी, गांधीजीकी यादमें दी जानेवाली श्रद्धांजलिके साथ अपने आपको जोड़नेकी अिच्छा स्वाभाविक और अुचित है। लेकिन अैसा करनेके लिअे विज्ञापनोंके बनिस्बत दूसरे ज्यादा अच्छे साधन हैं। अेक अैसा साधन गांधी राष्ट्रीय स्मारक-निधिमें अुदारतासे दान देना है। मुझे कोअी शक नहीं कि व्यापारी लोग अैसा कर रहे हैं और करेंगे। अगर व्यापारी फर्में कमेटीकी तरफसे अपने कर्मचारियों और मजदूरोंसे दानकी रकम अिकट्ठी करनेका जिम्मा ले लें, तो स्मारक-निधि-कमेटीका काम भी हलका हो जायगा।

"गांधी राष्ट्रीय स्मारक-फण्डकी मददमें या अुसकी तरफसे किये जानेवाले सिनेमाके खेलों या घुड़दौड़ या दूसरे खेल-तमाशोंका भी मैं विरोध करूँगा। ये सब काम व्यवस्था करनेवाले अपनी जिम्मेदारी पर हाथमें लें और जनता अुनके गुणोंके खातिर अुन्हें मदद दे सकती है। गांधीजीका नाम अैसे कामोंके साथ न जोड़ा जाय, जिनका अुन्होंने अपने जीवनकालमें विरोध किया या अुपेक्षा की।

"मुझे आशा है कि अखबार फण्डके मकसदोंका प्रचार करके और जनताको फण्डमें दान देनेका फर्ज समझा कर स्मारक-निधि-कमेटीको अपना बहुत कीमती सहयोग देते रहेंगे। मेरा सुझाव है कि हरअेक अखबार और रिसाला अिस मकसदके लिअे नियमित रूपसे अपने कालमोंमें जगह दे।"

अूपरका बयान बिलकुल समयका है। सच पूछा जाय तो १५ अगस्तके थोड़े दिन बाद ही यह विरोध किया जाना चाहिये था, जब हर व्यापारी फर्मने राष्ट्रीय झण्डेके साथ अपना विज्ञापन देना शुरू किया था। हम हिन्दुस्तानी लोग, खास कर हिन्दू, अिस बातका बिलकुल विचार नहीं करते कि हम जिनको सबसे ज्यादा आदर देते हैं, अुनके साथ कैसा अशिष्ट बरताव करते हैं। माचिसों, सिगरेटके कार्टूनों, शराबकी बोतलों, दुकानोंके साअिनबोर्डों वगैरा पर हम बिना किसी हिचकिचाटके हिन्दू देवताओं और अवतरोंके चित्र छापते हैं। अेक तरफ हम देवताओंकी तरह अुनकी पूजा करते हैं और दूसरी तरफ अुन्हें रंगमंच और परदेपर दिखाते हैं और अुनके नामपर अपनी व्यापारी फर्मोंके नाम रखते हैं।

आप न तो कभी स्टेजपर अीसा मसीह या मोहम्मदका पार्ट करते हुअे किसी अीसाअी या मुसलमानको देखेंगे और न अुनके चित्रोंको विज्ञापनों या दुकानोंके साअिनबोर्डों पर देखेंगे। न ही आपको 'जीसस क्राअिस्ट मिल्स' या 'रसूल मोहम्मद फार्मेसी' जैसी कोअी व्यापारी फर्म देखनेको मिलेगी। अीसाअी या मुसलमान जनमत अिसे सहन नहीं करेगा। जब आप किसी व्यक्तिको देवताकी तरह मानते हैं, तो बिना सोचे-विचारे अुसके चित्रको छापना या अुसका अभिनय करना, या अुसके नामपर अपनी कंपनी या फर्मका नाम रखना अीश्वर-निन्दा नहीं तो अशिष्टता जरूर मानी जानी चाहिये।

वर्धा, ४–४–'४८

(अंग्रेजीसे) किशोरलाल मशरूवाला

## गांधी-स्मारक-निधिकी रसीदें

अेक शिकायत आअी है कि ये रसीदें अंग्रेजीमें छापी गअी हैं। मेरे विचारसे यह शिकायत अुचित है। गाँवोंके कार्यकर्ता और दानी लोग अुन्हें समझ नहीं सकेंगे। गांधीजीने नअी दिल्लीसे ११–९–'४७ को, यानी औपनिवेशिक स्वराज मिलनेके अेक महीनेके अन्दर ही नीचेकी बात लिखी थी :

"अगर हिन्दुस्तानकी सरकारें और कचहरियाँ ध्यान नहीं देंगी, तो सम्भव है कि अंग्रेजी हिन्दुस्तानीकी जगह ले ले। अिससे हिन्दुस्तानके लाखों करोड़ों लोगोंको जरूर नुकसान होगा, जो कभी अंग्रेजी नहीं समझ सकेंगे। सचमुच प्रान्तीय सरकारोंके लिअे अैसे कर्मचारी रखना आसान होना चाहिये, जो सारी कार्रवाअी प्रान्तीय भाषाओं और अन्तरप्रान्तीय भाषामें कर सकें। मेरी रायमें नागरी या अुर्दूमें लिखी जानेवाली हिन्दुस्तानी ही अन्तरप्रान्तीय भाषा हो सकती है।

"यह जरूरी फेरबदल करनेमें गँवाया जानेवाला अेक अेक दिन राष्ट्रको अुतना ही सांस्कृतिक या तहजीबी नुकसान पहुँचायेगा।"
(हरिजनसेवक, २१ सितम्बर, १९४७)

अगर गांधी-स्मारक-निधिकी आफिस, यह जानते हुअे भी कि अुसके प्रान्तीय कार्यकर्ता हिन्दुस्तानी भाषाओंके बनिस्बत अंग्रेजीके जरिये काम करनेमें ज्यादा कठिनाअी महसूस करेंगे, यह फेरबदल नहीं करेगी, तो सरकारों और अुनके कर्मचारियोंको अप्रगतिशील होने और

www.vinoba.in

जनताके सुभीतेके बजाय अपना सुभीता देखनेके लिअे माफ किया जा सकता है। स्मारक-निधि-आफिसने जाने या अनजाने वही गलती की है, जिसका अिलजाम आचार्य कृपालानी व्यापारी फर्मोंपर लगाते हैं — यानी वह अैसा माध्यम अुपयोगमें ला रही है, जिसे गांधीजी अिस सम्बन्धमें "नुकसानदेह और देशभक्तिके खिलाफ समझते।" मुझे अुम्मीद है कि आफिस जल्दी ही अिस गलतीको सुधारनेके लिअे कदम अुठायेगी।

वर्धा, ४–४–'४८ किशोरलाल मशरूवाला

(अंग्रेजीसे)

# धर्मकी भाषा

[गोपुरी (वर्धा) में १४–२–'४८ को दिया हुआ श्री विनोबाका प्रवचन।]

अभी मैंने जो भजन[1] गाया, वह फातिहाका मराठी अनुवाद है, जो मैंने आठ बरस पहले किया था। फातिहा कुरानका पहला अध्याय है और वह मुसलमानोंके हर प्रसंगमें गाया जाता है। अुसमें अैसी प्रार्थना है कि भगवान हमें सीधा रास्ता दिखा। कभी कभी मैं अुसे बोला करता हूँ। पर मैंने देखा है कि अरबीके अभिमानी लोगोंको अुससे सन्तोष नहीं होता, हालाँकि भाषान्तरकी दृष्टिसे अुन्हें अिसमें कोअी दोष नजर नहीं आता। अिसके गानेसे अुन्हें अैसा नहीं लगता कि कुरानका कोअी हिस्सा गाया गया है।

यही हालत संस्कृतके अभिमानियोंकी है। 'गीताअी' गीताका मराठी अनुवाद है, जिसका पाठ हम लोग बरसोंसे करते आ रहे हैं। यह अनुवाद आम जनतामें पहुँच चुका है और जनताने अुसे मान्य भी किया है। संस्कृतके सिवा — अर्थज्ञान न हो तो भी — समाधान नहीं होता, अैसा कहनेवाले लोग मिलते हैं। यह मैं समझ सकता हूँ कि जिन मंत्रोंके अर्थका महत्त्व न होनेपर भी सिर्फ जिनके जप द्वारा ही सिद्धि प्राप्त करनेकी जहाँ कल्पना रहती है, वहाँ अनुवादसे काम नहीं चल सकता। परन्तु गीता, कुरान आदि ग्रन्थ वैसे नहीं हैं। वे तो जीवनोपयोगी और चित्त-शुद्धिके लिअे हैं। अैसे ग्रन्थोंको केवल रटनेसे काम नहीं चलता। अर्थ समझे बिना शब्दोंका अुच्चारण भी निर्दोष नहीं होता। फिर तो वहाँ केवल शब्दोंका ही लोभ रह जाता है। अुच्चारण चाहे सदोष ही क्यों न हो, पर क्योंकि संस्कृत, अरबी, हिब्रू, आदि भाषाअें धर्मभाषाअें मानी गअी हैं, अिसलिअे अुन भाषाओंमें पठन करनेसे ही पुण्य-लाभ होता है, यह केवल अेक अन्ध (झूठा) विश्वास ही है। जहाँ मनन न हो, जहाँ चित्त-शुद्धिका अनुभव न होता हो, वहाँ सिर्फ यांत्रिक क्रिया द्वारा पुण्य प्राप्त करनेकी वृत्तिको मैं चोरीकी नीयत मानता हूँ। बिना परिश्रम किये धन लूटने-जैसी यह वृत्ति है। चित्त-शुद्धिकी तकलीफके बिना ही पुण्य हमारे नामपर जमा होते रहें, अिस भावनासे ही अभी तक धर्मकी काफी हानि हुअी है।

यदि धर्म जीवनकी चीज है, तो अुसकी प्राप्तिके लिअे मातृभाषाके अलावा दूसरी किसी भी भाषाकी आवश्यकता न होनी चाहिये। मातृभाषाके अलावा अेक राष्ट्रभाषा या प्रान्तीय भाषाकी मैं कल्पना कर सकता हूँ। पर धर्मके लिअे भी जब किसी अन्य भाषाकी कल्पना की जाती है, तब समाजको खतरेमें समझना चाहिये। जिस माताके दूधसे बालकको पोषण मिलता है, अुसी माताकी भाषाके द्वारा और अुसके दूधके साथ ही अुसे धर्मकी शिक्षा भी मिलनी चाहिये। अगर अैसा नहीं है और धर्म तालेमें ही बन्द पड़ा है, और सिर्फ संस्कृत, अरबी-जैसी किसी खास 'धर्मभाषा' के ज्ञानसे ही खुल सकता है, तो समझना चाहिये कि वह धर्म और वह समाज दोनों खतरेमें हैं। और हम समाजसे अलग रह जाते हैं, यह अेक नुकसान अुसमें है ही।

वर्धा और पवनारकी सार्वजनिक सभाओंमें मैंने 'अीशावास्य' मराठीमें गाया है। अुपनिषदोंको तो मानो हमने अपनी शक्तिके बाहरकी किसी पहाड़ीपर रखी हुअी चीजके समान मान लिया है। पर अुसे मराठीमें गानेके बाद हमारे देहाती भी अुसका अर्थ समझ सके और अुसका असर अुनके चित्तपर भी हुआ। अगर मैंने अुसे संस्कृतमें गाया होता, तो वह सिर्फ मेरे लिअे ही अुपयोगी होता और आस-पासकी आम जनतासे मैं दूर रह जाता। फिर रेलोंमें जैसे दरजे होते हैं, वैसे मेरे लिअे संस्कृत और दूसरोंके लिअे मराठी, हिन्दी, गुजराती अैसे भेद पड़ जाते। अिसलिअे धर्मग्रन्थ जनताकी भाषामें ही होने चाहियें, और हो सकते हैं। गीता आदिके अुत्तम अनुवाद यदि प्राप्त हों, तो अुनका अुपयोग किया जा सकता है। अन्यथा तुकारामके अभंग, तुलसीदासजीकी रामायण, नरसी मेहताके भजन आदि जो प्रासादिक ग्रंथ अुन अुन भाषाओंमें मौजूद हैं, अुन्हींका आश्रय हमें लेना चाहिये। अुनसे हमें जो अुत्तम धर्मज्ञान मिलता है, वह जीवनके लिअे लाभप्रद हो सकता है। यह अन्ध श्रद्धा हमें छोड़ ही देनी चाहिये कि धर्म किसी खास भाषामें भरा है।

अिसमें संस्कृतादिके अध्ययनका निषेध नहीं है। अुन भाषाओंको सीखनेके अिच्छुक अुन्हें जरूर सीखें। मैंने जब भी किसीको संस्कृत सिखाअी, तब अिसी तरहसे सिखाअी। किन्तु मेरा अितना ही कहना है कि धर्मभावनाके विकासके लिअे मातृभाषाका ही सहारा लेना चाहिये।

परन्तु धर्माभिमानियोंको भाषाका ही नहीं, बल्कि लिपिका भी अभिमान रहता है। मैंने अेक अैसे कर्नाटकी गृहस्थको देखा है, जिनकी धर्मभावना संस्कृत गीताको कन्नड़ लिपिमें पढ़नेसे तृप्त नहीं होती थी। धर्म-दृष्टिसे वह देवनागरीमें ही पढ़ना आवश्यक समझते थे। अुसीसे अुन्हें पुण्य मिलता था। यह केवल अभिमान है। और जहाँ अभिमान है, वहाँ और चाहे जो हो, धर्म नहीं रह सकता।

१. अल् फातिहा (कुरानका पहला अध्याय) का श्री विनोबाका अनुवाद :

राग भैरवी – ताल धुमाळी

आरंभीं देवाचें नाम, कृपाळु जो कनवाळू[1] — ध्रु०
स्तुति त्या देवाची, प्रभु जो विश्वाचा,
कृपाळु कनवाळू, स्वामी शेवटच्या दिवसाचा ॥
तुझी करूं भक्ति, तुझी च रे याचना,
सरळ मार्ग दाखिव तूं आम्हां —
ज्यांवरि तूं करितोसि कृपा त्यांचा;
न ज्यांवरि तुझा प्रकोप अुतरे,
न वा भ्रमित जे त्यांचा.

म्हण रे देव तो अेक, देव तो निरपेक्षचि,
नसे[2] पिता नसे पुत्र, नसे कोणि हि[3] तत्सम.

१. मायाळु, करुणासे भरा हुआ। २. नहीं। ३. कोअी भी

अल् फातिहाका हिन्दुस्तानी अनुवाद :

"मैं पापात्मा शैतानसे बचनेके लिअे परमात्माकी शरणमें जाता हूँ।

"प्रभो, तेरे ही नामसे मैं सब शुरू करता हूँ। तू दयाका सागर है, तू मेहरबान है, तू सारे विश्वका सरजनहार है, मालिक है। हम तेरी ही आराधना करते हैं, तेरी ही मदद माँगते हैं। तू ही अन्तमें न्याय करेगा। तू हमें सीधा रास्ता दिखा — अुन लोगोंका रास्ता, जो तेरे कृपापात्र बने हैं; अुनका नहीं, जो तेरी अप्रसन्नताके पात्र बने हैं और जो मार्ग भूले हैं।"

## राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानी

लेखक : गांधीजी

राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानीके बारेमें गांधीजीके आज तकके सारे विचारोंका संग्रह। कीमत — डेढ़ रुपया, डाकखर्च — ५ आने।

व्यवस्थापक, नवजीवन कार्यालय
पोस्ट बॉक्स १०५, अहमदाबाद

www.vinoba.in

## गोधराकी पुकार

श्री मामासाहब फड़केके पत्रमेंसे यहाँ थोड़ा हिस्सा देता हूँ :

"मार्च २५ से २८ तक गोधरा और शहेरामें जो लंकाकाण्ड हुआ, अुसकी दर्दभरी कहानी अब सबको मालूम हो चुकी है। अिन दिनोंमें मैं बम्बअी तरफ गया था। लेकिन मैंने जो हकीकतें अिकट्ठी कीं, अुनका सार अितना है —

"सिंधसे आये हुअे शरणार्थियोंने कुछ तूफान मचाया। अुसमें स्थानीय हिन्दुओंने भी थोड़ा हिस्सा लिया। अिससे मुसलमान चिढ़े और अुन्होंने बड़े पैमानेपर आग लगाअी। लेकिन आगने हिन्दू-मुसलमानके भेदको न माना। नतीजा यह हुआ कि मुसलमानों और बहुतसे हिन्दुओंके मिलकर हजारों मकान और दुकानें जलकर साफ हो गअीं। अुसमेंसे लूटकी शुरूआत हुअी। अच्छे सभ्य मालूम होनेवाले लोगोंने भी अुसमें काफी हिस्सा लिया। बड़ोंका अनुकरण छोटे करते ही हैं, अिस कहावतके मुताबिक गोधरासे १२ मीलपर बसे हुअे शहेरा कसबेमें आसपासके गाँवोंसे भीलों और बारियाओंके झुण्ड घुस आये और अुन्होंने मनमानी लूटपाट करके और आग लगाकर सारे कसबेको पूरी तरह बरबाद कर दिया। सरकारके पास गोधराको बचाने लायक भी अिन्तजाम नहीं था। अिसलिअे गोधरा छोड़कर शहेराको बचाने जाना संभव ही नहीं था। आखिरमें यह काम देरसे, लेकिन अपनी शक्ति भर लूनावाड़ाके महाराजने खुद जाकर पूरा किया। अिसकी वजहसे गाँवके जलकर खाक हो जाने पर भी आदमी सलामत रह सके।

"गोधराकी मुसीबतकी बात फैलते ही कांग्रेस सेवादलके सैनिक और गुजरातके मशहूर सेवक गोधरा पहुच गये और अुन्होंने राहत-काम शुरू किया। वह काम सरदार वल्लभभाअीके बहादुर अनुयायियोंको शोभा देनेवाला था। सेवादल आज भी अुत्तम काम कर रहा है। अुसने मकानोंके खंडहरोंके नीचे दबे या गड़े हुअे कितने ही आदमियों और ढोरोंको बचाया है। निराधार बने हुअे लोगोंको अुसने अनाज वगैराकी मदद पहुँचाअी है। गाँवका मामूली कामकाज शुरू हो गया है। रास्ते बहुत कुछ चलने लायक साफ हो गये हैं। अभी तो फौज और पुलिसकी काफी देखरेख होनेसे गोधरामें रहे हुअे लोग बेडर होकर अपने रोजके कामकाज करने लगे हैं।

"राहतका काम तो गुजरात करेगा ही, अिसमें कोअी शक नहीं। लेकिन गोधरा और शहेरा पहले-जैसे या छोटे गाँव बन जायँगे, यह कौन कह सकता है? समाज-सेवकोंका क्या फर्ज है? प्राणियोंको बचानेका या बचे हुओंमें नये प्राण फूँकनेका? अुनका फर्ज समाज-रूपी शरीरको टिकाये रखनेका है या अुनमें नये आदर्श फैलानेका? अकाल, बाढ़ या भूकम्प-जैसी कुदरती मुसीबतोंमें तो राहत-काम ही अेक मात्र अुत्तम अिलाज है। लेकिन गोधरा या शहेरा कुदरती हवा या आगसे नहीं जले। वे तो मनुष्योंके मनमें धधकती हुअी द्वेषकी आगसे और प्रचारकी हवासे जले हैं। वह आग सिर्फ बाहरी राहत-कामसे ठण्डी नहीं पड़ेगी। अुलटे, यहाँके लोग जहाँ जहाँ जायँगे, वहाँ वहाँ अिस आगकी चिनगारियाँ फैलेंगी। यह आग सक्रिय प्रेम यानी निस्स्वार्थ और भेदभावके बिना लगातार की जानेवाली सार्वजनिक सेवासे ही बुझेगी।

"पंचमहाल जिला ब्रिटिश गुजरातमें सबसे पिछड़ा हुआ जिला है। वह सम्पत्तिमें, शिक्षामें, पैदावारमें, हर तरहसे पिछड़ा हुआ है। यह अेक विचार करने-जैसी बात है कि पंचमहालके पास अपने नेता नहीं हैं। अिसका कारण अुसकी गरीबी है या नेताओंके न होनेसे वह दरिद्र है? पुरुषार्थ करनेवाले सेवक हों, तो अुसकी गरीबी नहीं रहनी चाहिये। अिसलिअे योग्य सेवकोंकी कमी ही अुसकी गरीबीका सबसे बड़ा कारण समझना चाहिये। फिर भी अुसके पास थोड़े मूक सेवक हैं। वे जब अनुभवसे पक्के हो जायँगे, तबकी बात तबसे है। आज तो यह लगता है कि पंचमहालका अेक अेक आदमी अपने ही लिअे जीता है। यह मेरा ३० बरसका अेक-सा अनुभव है। अिससे मुझे निराशा होती है। मुझे लगता है कि १९२२में जिस तरह बारडोलीमें सारे गुजरातके रचनात्मक कार्यकर्ताओंकी ताकत बरसों तकके लिअे अिकट्ठी की गअी थी और अुसमेंसे जिस तरह बारडोली आश्रमका राजकीय काम और बेड़छीके आसपास श्री जुगतरामभाअीका समाज-सेवा और लोक-शिक्षणका काम आगे बढ़ा, अुसी तरह गोधरामें और पंचमहाल-जैसे पिछड़े और कमजोर हिस्सोंमें कमसे कम थोड़े समयके लिअे सारी ताकत अिकट्ठी हो, तभी यहाँकी जड़ता मिट सकती है।

"अब गोधराके राहत-काममें पैसेकी मदद मिलने लगी है। लेकिन वह अलग अलग जातिके लिअे मिलती है। गोधराके सारे निराधार और दुःखी लोगोंके लिअे नहीं। क्या अब भी मदद देनेवाले और लेनेवाले नहीं चेतेंगे? १९२७ की बाढ़के समय सुना था कि पेड़की अेक ही डालपर आदमी और साँप अेक दूसरेको नुकसान पहुँचाये बिना बैठे थे। आजकी मुसीबतमें भी अगर जाति और धर्मके भेदभाव चालू ही रहेंगे, तो कहा जायगा कि धरतीका रसातल जानेका समय आ गया है। कअी दिनोंकी चर्चाके बाद कायम किये गये सर्वोदय समाजके आदर्शोंमें श्रद्धा रखनेवाले सेवकोंके लिअे अेक पखवारेके भीतर ही अीश्वरने नया और बड़ा भारी कार्यक्षेत्र खोला है। हर आदमीको भाअीचारेकी शिक्षा देनेका यह सुनहला मौका हमें मिला है। अुसका तुरत लाभ अुठाकर हमें अपना यह दावा साबित करना चाहिये कि हम बापूजीके समकालीन और अुनके अनुयायी हैं।"

मामासाहबकी निराश मनोवृत्तिमेंसे पैदा होनेवाली अेक सूचना मुझे अच्छी नहीं लगी। वैसे तो लोकसेवकके लिअे सारी दुनिया ही स्वदेश है, और जो सेवाक्षेत्र अुसे बुलाता लगे, अुसे वह अपनी कर्मभूमि बना सकता है। लेकिन पंचमहाल अपने ही सेवादल द्वारा अपनी पूरी अुन्नति नहीं कर सकता और सूरत, भड़ौंच, खेड़ा, अहमदाबाद, बड़ौदा या सौराष्ट्रके सेवक अुसका अुद्धार कर देंगे, अैसा अविश्वास पंचमहाल अपने बारेमें रखे यह ठीक नहीं है। मामासाहबने ३० बरस तक पंचमहालकी जो मूक सेवा की है, अुसके बाहरी नतीजे अितने सुन्दर नहीं कि अुन्हें सन्तोष दिला सकें। अिसलिअे अुन्हें असन्तोष और निराशा हुअी है। लेकिन हमें यह पक्की श्रद्धा रखनी चाहिये कि अुनकी तपस्या असफल नहीं होगी।

गोधरा और शहेराकी प्रजासे तो क्या कहा जाय? लोगों पर गुजरी हुअी मुसीबतोंकी सिर्फ बात सुनकर ही दिल रो पड़ता है, तो जिन्हें ये दुःख सहने पड़े हैं, अुनके मनोभावोंकी कल्पना करना मुश्किल नहीं है। फिर भी अेक दो बात कहे बिना रहा नहीं जाता। मामासाहबने राहत-काममें रखी जानेवाली अलग अलग जातिकी दृष्टिका जो जिक्र किया है, अुससे बड़ा दुःख होता है। यह ओछापन छोड़े बिना हमारा कल्याण या अुन्नति नहीं हो सकती।

दूसरे, अेकाध आदमी भलाअीका रास्ता छोड़नेपर भी दुनियामें थोड़े समय तक अुन्नति करे और सफल हो, अैसा कभी कभी देखा जाता है। लेकिन सभी लोग भलाअीका रास्ता छोड़ें और सभी सफल और सुखी बनें, अैसा कभी देखनेमें नहीं आता। दूसरी तरफ, सभी लोग भलाअीके रास्ते चलें, तो यह साफ है कि कोअी खाने बिना न रहे, कोअी दुःखी न हो। आज दुनियाने बुराअीको ही तरक्कीका आमरास्ता बनानेका धन्धा पकड़ लिया है। अिसके बुरे नतीजोंसे बचना मुश्किल है।

www.vinoba.in

कोअी बुरे रास्ते जाते हुअे भी जीवनमें सफल होता है, यह देखकर जब दूसरेको बुरे रास्ते जानेका लालच होता है, तब सद्‌गुणी और अनुभवी लोग कहते हैं — अिसके बुरे दिन आये हैं, क्या तेरे भी बुरे दिन आये हैं ? सद्‌गुणमें रहनेवाली तीव्र निष्ठा ही आखिरमें मनुष्यको तार सकती है, अिस पक्के विश्वासके बिना जनता सुखी नहीं हो सकती । दूसरे, न्याय और भलाअीके रास्ते जायें, तो फिर हम भी जायेंगे, अैसा विचार करनेवाले लोग आत्मघात ही करते हैं । दूसरे भले ही पापके रास्ते जाकर अैश-आराम भोगें, लेकिन हम तो मुसीबतें सहते हुअे भी भलाअीके रास्ते ही जायेंगे, अैसा जो विचारेंगे, वे ही आखिरमें सुख और शान्तिके दिन देखेंगे । अिसमें सर्वोदय समाजकी स्थापना है ।

वर्धा ९-४-'४८

(गुजरातीसे) **किशोरलाल मशरूवाला**

# हरिजनसेवक

१८ अप्रैल १९४८

## साधन-शुद्धि पर जोर

श्री विनोबा भावेने सेवाग्राम-सम्मेलनमें कअी विचार करने लायक भाषण दिये । 'हरिजन'के किसी अगले अंकमें मैं संक्षेपमें अुन्हें देनेकी अुम्मीद रखता हूँ । अिस लेखमें मैं सिर्फ अेक ही विषयको लूँगा, जिसपर अुन्होंने बार बार जोर दिया था । अुन्होंने मेम्बरोंसे पूछा कि विचारों, जातियों वगैराका भेद होते हुअे भी क्या हर व्यक्ति कमसे कम अिस अेक बातपर सहमत नहीं हो सकता कि किसी मकसदको पानेके साधन भी शुद्ध होने चाहियें ? यह बात तब और भी जरूरी हो जाती है, जब किसी हिमायतीका यह विश्वास हो कि अुसका मकसद अूँचा और पवित्र है । श्री विनोबाने कहा, मुझे पक्का विश्वास है कि किसी अूँचेसे अूँचे मकसदको हासिल करनेके लिअे भी हिंसासे काम लिया गया, तो वह लोगोंको जरूर सर्वनाशकी तरफ ले जायगी । मुझे लगता है कि जो लोग गांधीजीके आदर्शोंके जरिये अेकमत हो सकते हैं, कमसे कम अुन्हें तो अपनी अपनी संस्थाओं और संघोंको चलानेमें शुद्ध साधनों पर जोर देना चाहिये ।

जैसा कि श्री विनोबाने कहा, अच्छाअी या बुराअी किसी अेक संस्थाका अिजारा नहीं है । हर तरहके विचार या आअिडियालॉजीकी हिमायत करनेवाले लोगोंमें अच्छाअी और बुराअी होती है और अिस अेक बातमें वे सब समान हैं । दुनियाके लिअे जरूरी और फायदेमन्द यही है कि वह अुनमेंसे हरअेककी अच्छी बातें ले ले और बुरी बातें छोड़ दे । लेकिन लोगोंके लिअे यह करना तभी संभव होगा, जब हर संस्था अपने मकसदको हासिल करनेके लिअे असत्य और हिंसाके छोड़नेपर जोर दे । पुराने जमानेमें लोगोंने भले मानवदयाके विचारसे हथियार अुठाये हों, लेकिन अब तो हम अूँचेसे अूँचे मकसदके लिअे अुठाये जानेवाले हथियारोंकी असारता देख चुके हैं । साअिन्सने हथियारोंके आविष्कारकी सीमा बाँधनेकी बातको नामुमकिन बना दिया है । अिसलिअे यह जरूरी है कि हिंसाको बिलकुल छोड़कर अहिंसक तरीकोंको मंजूर किया जाय । विनोबा नहीं मानते कि किसी भी संस्थाके लिअे आवश्यक बुराअीके तौर पर हिंसाको मानना लाजमी है । अिसके खिलाफ अगर विवेकशील लोग अेक साथ मिलकर चर्चा करें, तो हिंसाकी जरूरत बढ़नेके बजाय घटनी चाहिये । लेकिन हिंसा सत्ताके साथ आती है, जो अपने आपको कायम रखनेके लिअे हमेशा दूसरोंपर बाहरसे वफादारी लादना चाहती है ।

आगे चलकर श्री विनोबाने राष्ट्रीय स्वयंसेवक-संघ और अुसकी पैदा की हुअी बुराअीका जिक्र किया । अिस हलचलने, जो महाराष्ट्रमें शुरू हुअी थी, अब अेक दर्शन या वादका रूप ले लिया था । यह लाजमी-सा है कि विचारकोंके अलग अलग दलोंका अलग अलग दर्शन या वाद भी हो । लेकिन अगर वे सब शुद्ध साधनोंके रास्तेसे न हटनेका आग्रह रख सकें, तो अेक तरहका नैतिक मोर्चा कायम हो जायगा, जिससे दूसरोंको लाभ होगा । जिसने सत्य और अहिंसाका व्रत लिया है, अुससे देशकी ताकत बढ़ेगी, फिर वह किसी भी क्षेत्रमें काम करे । गांधीजीने हमेशा अिस बातपर जोर दिया कि साधनोंको शुद्ध रखा जाय, लेकिन हमने अुनकी बात नहीं मानी । श्री विनोबाने समझाया कि दीवाल बनानेका यह अुसूल है कि वह जमीनसे समकोणपर खड़ी की जाय । कोअी भी बनानेवाला यह नहीं कहेगा कि दीवाल किसी तरफ थोड़ी झुक जाय तो कोअी बात नहीं, हालाँ कि हम जानते हैं कि हर तरहकी सावधानीके बावजूद बनानेवाला अक्सर अिस अुसूलसे थोड़ा दूर हो जाता है । अिसी तरह कोअी यह नहीं कह सकता कि जरूरत पड़ने पर सत्य और अहिंसाके अुसूलसे थोड़ा अिधर-अुधर हट जाना कोअी बड़ा महत्त्व नहीं रखता । हमें हर हालतमें सत्य और अहिंसा पर जोर देना चाहिये ।

श्री जयप्रकाश नारायणने सम्मेलनमें दिये गये अपने भाषणमें अेक जगह कहा कि पहले साध्य और साधनके सम्बन्धके बारेमें मेरे चाहे जो विचार रहे हों, लेकिन अब मेरा यह पहलेसे ज्यादा पक्का विश्वास हो गया है कि साधनोंका शुद्ध होना जरूरी है । सेवाग्राम-सम्मेलनके कुछ ही दिनों बाद नासिकमें हुअे समाजवादियोंके सम्मेलनमें भी अुन्होंने अपनी यह राय दोहराअी । पंडित जवाहरलाल नेहरूने भी सम्मेलनके अपने भाषणमें साधन-शुद्धि पर जोर दिया । अमेरिकाके चिकागो विश्व-विद्यालयके गोलमेज प्रोग्रामके लिअे दिया हुआ अुनका आयु-प्रवचन भी दूसरे रूपमें अिन्हीं विचारोंको जाहिर करता है । वह पूराका पूरा पढ़ने लायक है । अुनका वह भाषण अिसी अंकमें दूसरी जगह दिया गया है । यह प्रसन्नता और आशाकी निशानी है कि तीन स्वतंत्र संस्थाओंके अलग अलग लेकिन अेक दूसरीसे जुड़ी हुअी विचारधारा रखनेवाले नेता पंडित जवाहरलाल, श्री जयप्रकाश नारायण और श्री विनोबा अिस सबसे महत्त्वकी व्यावहारिक बातपर अेकमत हैं । अिस अुसूलका दृढ़तासे पालन करने पर ही जनताका सुख बहुत कुछ निर्भर करता है ।

गांधीजीने १५-१०-'३८के 'हरिजन'में लिखा था — "लड़ाअीकी साअिन्स हमें पूरी तरह तानाशाहीकी ओर ले जाती है । अकेली अहिंसाकी साअिन्स ही हमें शुद्ध लोकशाहीकी तरफ ले जा सकती है ।" स्मरणीय ८ अगस्त, १९४२के दिन अुन्होंने फिर अे० आअी० सी० सी०के मेम्बरोंसे कहा था — "मेरा विश्वास है कि सिर्फ अहिंसा ही सच्ची लोकशाहीको जन्म दे सकती है । सिर्फ अहिंसाकी नींव पर ही विश्व-संघकी अिमारत खड़ी की जा सकती है, और दुनियाके कामकाजमें हिंसाको पूरी तरह छोड़ देना होगा ।"

वर्धा, ७-४-'४८

(अंग्रेजीसे) **किशोरलाल मशरूवाला**

### सूचना

हमारी दिल्ली शाखाका दफ्तर, जो चाँदनी चौकमें था, अब नअी दिल्लीमें हटा दिया गया है । 'हरिजन' साप्ताहिकोंके अंग्रेजी, गुजराती, हिन्दुस्तानी और अुर्दू चारों संस्करण और दूसरे सब प्रकाशन वहाँ मिल सकते हैं । शाखाका पूरा पता यह है :—

**नवजीवन कार्यालय** (शाखा)
थिअेटर कम्युनिकेशन बिल्डिंग,
रूम नं० २६, २७, २७अे,
अेअर अिण्डियाके सामने, कनॉट प्लेस,
नअी दिल्ली

www.vinoba.in

## 'आखिरी मन्त्र'

८ अगस्त, १९४२को जबसे पूज्य बापूने 'करो या मरो' का व्रत लिया, तबसे अुनके जीवनकी अेक नअी कलाकी शुरूआत हुअी है। तबसे अेकके बाद अेक अुनके 'करने या मरने' के यज्ञोंकी कड़ी शुरू होती है। जब नंगे पाँवों अुन्होंने अकेले नोआखालीके गाँवोंकी यात्रा शुरू की, तब अुन्हें या और किसीको अिस बातकी खबर नहीं थी कि अुसका अन्त कब होगा। इसकी अुन्हें खुद भी कोई चिन्ता नहीं थी। किश्तीको जलाकर जैसे कोअी महासागरमें कूद पड़े और अेक क्षणके लिअे भी पीछें नज़र डाले बिना सागरके प्रवाहमें आगे और आगे बढ़ता चला जाय, अैसा ही अुनका साहस था। नोआखालीसे वे पटना, दिल्ली, कलकत्ता और फिर वापस दिल्ली पहुँचे। ये सब अुनके लिअे अुपसागर-जैसे बन गये थे; और दिल्लीसे अुन्होंने अनन्त सागरमें प्रवेश किया। नोआखाली, पटना या कलकत्ता वापस जानेकी अुनकी आशाका भी लोप हो गया; और दिल्लीसे अुन्होंने लिखा: "अब तो मुझे लगता है कि मुझे यहीं 'करना या मरना' है। अिसका मतलब यह है कि आप लोगोंमेंसे जो जहाँ हैं, अुन्हें वहीं 'करना या मरना' है।"

अुनका 'करूँगा या मरूँगा' का व्रत भी मामूली भौतिक अर्थमें नहीं था। अुन्हें जो चाहिये था, वह था — 'हेवन्स सक्सेस ऑर अर्थस् फेल्योर'। सर्वज्ञ और अन्तर्यामी प्रभुकी परीक्षामें पास होना या दुनियावी कामयाबीकी बलि देना, सब कुछ खोना। अुन्होंने अपनी सारी संस्थाओंको — पूरे जीवनकार्यको — अेक तरफ रखकर अपने व्रतकी साधनामें तीन गोलियाँ खाकर महाप्रयाण किया। अैसा करके अुन्होंने सबको व्रतनिष्ठा और अीश्वरमयी अनासक्तिका सबक दिया।

अेक अंग्रेज दोस्तने हाल ही में अपने अेक खतमें लिखा है:

"बापूकी मौतके बाद दुःखसे हिम्मत हारकर कार्यक्षेत्रसे भागना तो चाहिये ही नहीं।"

अगर बापूकी मौत किसी दूसरी तरहसे हुअी होती, तो आज हम लोग शायद अिस चिन्तामें पड़ जाते कि अब हमें क्या करना चाहिये। मगर अपना आखिरी बलिदान देकर अुन्होंने हमारे लिअे अेक प्रकाश-स्तम्भ खड़ा किया है, जो हमें हमेशा रास्ता दिखाता रहेगा।

अिस प्रकाश-स्तम्भपर नजर रखकर जो चलनेके लिअे तैयार हैं, अुनके लिअे जीवनमें किसी तरहकी घबराहट या निराशा हो ही नहीं सकती। बापूने जो काम करके अपने जीवन-कार्य के मन्दिरपर कलश चढ़ाया, वह काम हम सब कर सकते हैं। अुसमें हार या जीतकी कोअी बात ही नहीं है। अुसके लिअे न तो असाधारण बुद्धिकी जरूरत है और न शारीरिक बल या धन-दौलतकी। अुसके लिअे सिर्फ हमारे मनमें मानव-जातिकी सेवाकी भावनाका अुत्साह भर चाहिये। अन्याय या अत्याचारके सामने अपनी आत्माका विद्रोह और अुसके सामने लड़ते-लड़ते मरनेकी लगन छोटेसे छोटे माने जानेवाले प्राणीमें भी हो सकती है।

आज हम अपनी अिन आँखोंसे बापूजीको नहीं देख सकते। लेकिन जहाँ दुःखी और पीड़ित लोग हैं, जहाँ अन्याय और अत्याचारसे कुचले और दबाये हुअे लोग हैं, वहाँ बापू मौजूद हैं।

जो लोग अनाथोंके साथ अेकरूप होकर अुनके सुख-दुःखमें भाग लेने और अुनकी सेवा या रक्षाके लिअे जी-जानसे कोशिश करनेके लिअे तैयार हैं, अुन्हें आज भी बापूके दर्शन हो सकते हैं। जिस वक्त चारों तरफ साम्प्रदायिक द्वेष और बैरकी आग फैली हुअी थी, अुस वक्त हिन्दुस्तानके अल्पसंख्यक मुसलमानोंके लिअे बापूजी आश्रयरूप बन गये थे। अुनके चले जानेसे क्या हिन्दुस्तानके मुसलमान अनाथ बन जायेंगे? जिन्हें बापूके दर्शन करने हों, वे अुन मुसलमानोंके पास जायँ, और अुनके धर्म, अिज्जत-आबरू, और जान-मालकी रक्षामें अपनी जानकी बाजी लगावें। अिसी तरह वे भंगी-बस्तीमें रहनेवाले हरिजनोंमें और दूसरे दुःखी लोगोंमें जावें।

अिस साधनाके लिअे सामग्री है अेकादश व्रतोंका पालन, और खादी, ग्रामोद्योग, आरोग्य, अन्नकी पैदावार वगैरा विषयोंका ज्ञान। जिनके पास यह सामग्री है, यानी जो अिनका तेज बता सकते हैं, वे हैं बापूके वारिस। वे ही 'गांधीवादी' हैं। फिर भले वे किसी भी 'वाद' के हों। अुनकी साधना सफल होगी। बाकी सब बातें हवाअी और अनिश्चित हैं। गाड़ीमें, २२-३-'४८

(गुजरातीसे) प्यारेलाल

## हिन्दुस्तानीके बारेमें सफाअी

यह जरूरी हो गया है कि हिन्दुस्तानी — हिन्दुस्तानकी राष्ट्रभाषा — की परिभाषा और नीतिको साफ शब्दोंमें समझा दिया जाय। मैं नीचेकी बात सुझाता हूँ:

हिन्दुस्तानीकी परिभाषा यह है: "हिन्दुस्तानी अुत्तर हिन्दुस्तानके शहरों और गाँवोंमें रहनेवाले लोगोंकी आम भाषा है, जिसे वहाँके हिन्दू और मुसलमान अपने आपसके व्यवहारमें काममें लाते हैं और जो नागरी या अुर्दू (फारसी) लिपिमें लिखी जाती है। साहित्यमें यह हिन्दुस्तानी नागरी लिपिमें लिखी जानेवाली हिन्दी और फारसी लिपिमें लिखी जानेवाली अुर्दूका रूप ले लेती है। अिसलिअे हिन्दुस्तानी अपने साहित्यिक रूपमें आसान हिन्दी और आसान अुर्दूका सुन्दर समन्वय है।"

यहाँ यह चीज साफ कर दी जानी चाहिये कि राष्ट्रीय बननेके लिअे हिन्दी और अुर्दूके अिस मेलको अैसा आसान बनाना होगा कि अुसे पूर्व, दक्षिण और पश्चिमके लोग समझ सकें — जिनकी मातृभाषा न हिन्दी है, न अुर्दू और न अिन दोनोंसे मिलती जुलती कोअी बोली।

अिसलिअे यह साफ है कि हिन्दी और अुर्दूके जो शब्द ज्यादातर प्रान्तीय भाषाओंमें आम तौरपर पाये जाते हैं, वे हिन्दुस्तानीके प्रामाणिक शब्दकोशमें दूसरोंसे पहले लिये जा सकेंगे। यह देखा गया है कि हिन्दुस्तानकी सारी भाषाओंके ज्यादातर शब्द प्राकृत रूपमें अिस्तेमाल होनेवाले संस्कृत शब्द हैं। अिसलिअे अुन्हें कुदरती तौरपर हिन्दुस्तानीमें जगह मिलेगी। आम तौरपर यह बात महसूस नहीं की जाती कि अरबी और फारसीके बहुतसे शब्द हिन्दुस्तानकी प्रान्तीय भाषाओंमें आम फहम हो गये हैं। यह कोअी मामूली बात नहीं है। प्रान्तीय भाषाओं द्वारा अपनाये जानेके कारण ये शब्द भी कुदरती तौरपर हिन्दुस्तानीमें जगह पायेंगे। बेशक, हिन्दी और अुर्दू दोनोंके ज्यादासे ज्यादा अिस्तेमाल किये जानेवाले शब्द हिन्दुस्तानीके शब्दकोशका मुख्य भाग होंगे।

हिन्दुस्तानीकी लिपियोंके बारेमें यह समझना चाहिये कि नागरी प्रधान लिपि रहेगी। केन्द्रीय सरकारके सारे रेकॉर्ड और हिसाब-किताब आम तौरपर नागरी लिपिमें रखे जाने चाहियें। अुर्दू लिपि प्रधान न होनेसे करीब करीब दूसरी लिपि बन जायगी। आम जनताके लिअे सारे नोटिस, जाहिरात और बयान हिन्दुस्तानी भाषामें और नागरी और अुर्दू दोनों लिपियोंमें निकाले जाने चाहियें। नागरिकोंको दोनोंमेंसे किसी भी लिपिमें केन्द्रीय सरकारको अपनी बात लिखनेका हक होगा और वे यह आशा कर सकते हैं कि अुन्हें अपनी परिचित लिपिमें ही जवाब मिलेगा।

सरकारी नौकरों और शिक्षकोंके लिअे हिन्दुस्तानी और दोनों लिपियोंकी अच्छी जानकारी रखना जरूरी होगा। बड़े और ज्यादा अुमरवाले अफसरोंको अैसे क्लार्कोंकी मदद दी जायगी, जो हिन्दुस्तानी और दोनों लिपियोंके जानकर होंगे।

सारी स्कूलोंमें, चार प्राथमिक वर्गोंके अूपर, हिन्दुस्तानीका विषय लाजमी बना दिया जाय। अुन लोगोंको खास बढ़ावा दिया जाय, जो अेक साथ या अेक-अेक करके दोनों लिपियाँ सीखें। सरकारकी यह नीति होनी चाहिये कि वह दोनों लिपियोंके अभ्यासको लाजमी तो न बनावे, लेकिन अुसे जनतामें फैलानेके लिअे हर कोशिश करे।

वर्धा, १०-४-'४८

(अंग्रेजीसे) काका कालेलकर

www.vinoba.in

# हिन्दुस्तानी-प्रचार-सभा, वर्धा

## तीन ठहराव

ता० १२-३-'४८ को सेवाग्राममें हिन्दुस्तानी-प्रचार-सभा, वर्धाकी बैठक हुअी । अुसमें नीचेके ठहराव पास हुअे :

१. हिन्दुस्तानी-प्रचार-सभा, वर्धाके स्थापक और प्राण पूज्य महात्मा गांधीका ३० जनवरी, १९४८ की शामको प्रार्थनामें जाते समय गोली लगनेसे देहान्त हुआ । अिससे सबको बहुत बड़ा धक्का लगा है । राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानीका नागरी और अुर्दू दोनों लिपियोंमें प्रचार करनेके लिअे वे सभाकी सबसे बड़ी शक्ति थे । सभा अपनी श्रद्धांजलि अुनके अधूरे कामको पूरी करके ही दे सकती है ।

२. कांग्रेसके नये विधानके बुनियादी अुसूलोंके रूपमें जो ठहराव कुल हिन्द-कांग्रेस-समितिने अपनी २२ फरवरी, १९४८ की दिल्लीकी बैठकमें पास किया है, अुसमें रचनात्मक काम करनेवाली जिन संस्थाओंको मान्यता ( मंजूरी ) दी गअी है, अुन संस्थाओंकी फेहरिस्तमें अिस सभाका नाम नहीं है । राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानीका प्रचार रचनात्मक कामोंमेंसे अेक है । अुसके लिअे गांधीजीने तथा देशके दूसरे नेताओंने अिस हिन्दुस्तानी-प्रचार-सभाको मअी १९४२ में कायम किया है । यह सभा राष्ट्रीय कांग्रेससे बिनती करती है कि 'हिन्दुस्तानी-प्रचार-सभा, वर्धा' को भी अुस फेहरिस्तमें शामिल किया जाय ।

यह ठहराव राष्ट्रीय कांग्रेसकी कार्य-समितिको भेजनेके लिअे सभापतिसे बिनती की जाती है ।

३. विधान-सभाके अध्यक्षको नीचे लिखे मतलबका पत्र भेजा जाय : अखबारमें यह पढ़कर आश्चर्य हुआ कि आज़ाद हिन्दके लिअे अंबेडकर-कमेटीने जो विधान तैयार किया है, अुसमें राजभाषाके तौरपर हिन्दी और अंग्रेजीको जगह दी गअी है । सन १९२९ से आज तक कांग्रेसकी यही नीति रही है कि राष्ट्रभाषा और राजभाषाकी गद्दीसे अंग्रेजीको हटाया जाय और अुसकी जगह हिन्दुस्तानीको दी जाय । सभाकी राय है कि विधान-सभा हिन्दुस्तानीको ही राजभाषाकी जगह दे, जिसे अुत्तर हिन्दुस्तानके शहरों और गाँवोंके हिन्दू-मुसलमान वगैरा सब लोग बोलते हैं, समझते हैं और आपसके कारोबारमें बरतते हैं और जिसे नागरी और अुर्दू दोनों लिखावटोंमें लिखा-पढ़ा जाता है ।

## आगामी परीक्षाअें

सभाकी ओरसे ली जानेवाली हिन्दुस्तानी **लिखावट, पहली, दूसरी** और **तीसरी** परीक्षाअें **रविवार, ६ जून, १९४८** को होंगी । परीक्षामें शामिल होनेके लिअे अर्जियाँ ३० अप्रैल, १९४८ तक वर्धाके दफ्तरमें फीसके साथ पहुँच जानी चाहियें ।

## काबिल परीक्षा

चूँकि काबिल परीक्षामें ज्यादातर गुजरात, महाराष्ट्र और बम्बअीके ही अुम्मीदवार रहते हैं, अिसलिअे अुनकी सुविधाको खयालमें रखकर आगामी काबिल परीक्षाकी तारीखें ३, ४ जुलाअी १९४८ रखी गअी हैं । परीक्षामें शामिल होनेके लिअे अर्जियाँ ३० मअी तक वर्धाके दफ्तरमें फीसके साथ पहुँच जानी चाहियें । गुजरात प्रान्तसे शामिल होनेवाले अुम्मीदवार मंत्री, हिन्दुस्तानी-प्रचार-समिति, गूजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद ६ के मारफत और बम्बअीसे शामिल होनेवाले अुम्मीदवार मंत्री, हिन्दुस्तानी-प्रचार-सभा, अेडनवाला मेन्शन, सी फेस, चौपाटी, बम्बअी ७ के मारफत अर्जियाँ भेजें । दूसरे प्रान्तोंसे बैठनेवाले सीधे वर्धाके दफ्तरमें अर्जियाँ भेजें ।

वर्धा, ४-४-'४८

**अमृतलाल नाणावटी**
मंत्री, हिन्दुस्तानी-प्रचार-सभा, वर्धा

# पूर्व पंजाबमें विनोबा

[ पूर्व पंजाबमें गुड़गाँव जिलेके नूहके पास अेक देहातमें ६-४-'४८ को सुबह साढ़े दस बजे श्री विनोबाजी मेवोंसे मिलनेके लिअे गये थे । वहाँ अुन लोगोंने अेक छोटी मीटिंगका आयोजन किया था । मीटिंगमें गुड़गाँव जिलेके डी० सी० आदि अधिकारीगण भी हाजिर थे । मौ० हबीबुर रहमानने मेवोंकी ओरसे छोटासा भाषण दिया। अुसके बाद श्री विनोबाका नीचे लिखा भाषण हुआ । मीटिंगमें करीब दो-तीन सौ मेव हाजिर थे । — सं० ]

मैं यहाँ मीटिंगकी तैयारीसे नहीं आया था । मैं तो आप लोगोंका दुःख सुनने और देखने आया था । लेकिन मीटिंग की है, तो थोड़ा कह दूँ । आपसे पहली मरतबा मैं मिल रहा हूँ । वैसे दिली मुलाकात तो आपसे कबकी हो चुकी है । क्योंकि हिन्दुस्तानीकी हैसियतसे हम सब अेक ही हैं ।

आप लोगोंको काफी तकलीफ अुठानी पड़ी है । हमें जो आज़ादी मिली, वह मानो अिन बातोंका तजरबा लेनेके लिअे ही मिली । हम अगर दूसरोंके साथ बुराअी करते हैं, तो अुसका क्या नतीजा निकलता है, अिसका तजरबा हम लोगोंको हुआ है । हमारा देश बड़ा है । अलग अलग कौमें अिसमें रहती हैं । वे अगर मुहब्बतसे अेक दूसरीके साथ रहेंगी, तो ही अिस देशकी अिज्जत बढ़ेगी और देश ताकतवर बनेगा । वर्ना देशका बड़ा होना ही अुसके नाशका कारण बन जायगा ।

हम लोग अब काफी लड़ चुके हैं । अिसमें आपका कोअी कसूर था, अैसा भी मैं नहीं कहूँगा । अेक अैसी बुरी हवा हिन्दुस्तानमें फैल गअी थी कि अुसमें हम सब बह गये । अच्छेसे अच्छे लोग भी अुसमें बह गये । भगवानकी कृपासे अब अच्छी हवा शुरू हो रही है । मैं आशा करूँगा कि बहके हुअे लोग भी अब अच्छे हो जायँगे ।

भगवानने मनुष्यको दो बड़ी शक्तियाँ दी हैं । अेक है याद रखनेकी और दूसरी है भूल जानेकी । क्या याद रखना है और क्या भूल जाना है, अिस बारेमें विवेक होना चाहिये । वह हममें आ जाय, तो अभी भी बहुत कुछ बिगड़ा नहीं है । जो भलाअी है अुसे याद रखना और जो बुराअी है अुसे भूल जाना, यही वह विवेक है ।

अीश्वरपर भरोसा रखकर हिम्मत और मुहब्बतसे रहिये । अीश्वर सब कुछ जानता है । वही हमारा वकील है । वह हमारी सब तरहसे वकालत और हिफाजत करेगा, अैसा समझकर हिम्मत रखनी चाहिये । हिम्मत और मुहब्बत ये दो खुदाकी भक्ति करनेवालोंके गुण हैं ।

दिलोंको जोड़ना धर्मका काम है । लेकिन आज तो सब धर्म तोड़नेका ही काम कर रहे हैं । अिससे सभी धर्म बदनाम हो रहे हैं । यह देखकर भले लोग कहने लगे हैं कि अिन धर्मोंको छोड़ना ही बेहतर है । मैं अुम्मीद करता हूँ कि हम अैसी नौबत नहीं आने देंगे ।

यह देश आपका है और आप अिस देशके हैं । जो हुआ अुसे भूल जाअिये और नये सिरेसे अच्छी जिन्दगी बिताना शुरू कीजिये । अिस तरह करेंगे, तो आगे जब कभी हमें पिछली बातोंकी याद आ जायगी, तब हमें हँसी आयेगी कि क्या अैसी बातें भी हम कर गये थे ?

आपको हिम्मत देनेके लिअे मैं यहाँ आया हूँ । आप निराश न हो जायँ । अीश्वरपर विश्वास रखनेवाला निराश नहीं होता ।

www.vinoba.in

## किसान और खेतोंमें काम करनेवाले मजदूर

[श्री छोटुभाअी देसाअीकी नीचेकी बिनती अगर किसानोंके हृदयको न छूअे, तो अुसे मैं किसानोंकी और जनताकी बड़ी कमनसीबी समझूँगा। मजदूरी और अनाजके दर पैसेके रूपमें कितने होने चाहियें, अिसके हिसाबमें पड़कर हमने सरल सवालोंको भी कठिन बना दिया है। क्योंकि पैसे तो आज छापखानेकी अुपज हैं। मजदूर और अनाज छापखानेकी अुपज नहीं हैं। अिन दोनोंका सम्बन्ध पैसेसे बिलकुल अलग है, और अुसी तरह विचारा भी जाना चाहिये। मजदूरके बिना अनाज पैदा नहीं होता, और अनाजके बिना मजदूर जी नहीं सकता। जो मजदूरी मजदूर और अुसपर आधार रखनेवाले लोगोंके पेटमें पूरा अनाज पहुचाती है और मजदूरकी शक्ति बढ़ाने और टिकानेके लिअे दूसरे सुभीते और राहत देती है, वह मजदूरी और भाव ठीक हैं; फिर वे पैसेके रूपमें दो आने ही क्यों न हों। जो मजदूरी यह न करे वह अनुचित है; फिर भले पैसेके रूपमें वह १२ रुपये ही क्यों न कूती जाय।

हरअेक किसानका यह देखनेका धर्म है कि अुसके मजदूरोंका ठीक ठीक पालन-पोषण होता है या नहीं। अपने बैलोंको भूखा रखनेवाला किसान जितना कृतघ्नी है, अुतना ही या अुससे ज्यादा कृतघ्नी वह है, जो अपने मजदूरोंको भूखा रखता है। अगर यह फर्ज़ अदा न किया गया, तो किसी न किसी रूपमें मुसीबत खड़ी रहने ही वाली है।

किसान-सभाओंसे मैं आग्रह करता हूँ कि वे श्री छोटुभाअीकी बिनतीपर ध्यान दें और मजदूरोंको खुराक पानेमें आसानी पैदा करनेवाले सुभीते खोजें।

वर्धा, ९-४-'४८ —कि० मशरूवाला]

आजकल खेतीमें काम करनेवाले मजदूरोंका सवाल अितना नाजुक बन गया है कि अुसे छूते ही आग भड़क अुठनेका डर खड़ा हो गया है।

अिने-गिने लोग जब अहिंसक समाज-रचनाकी दृष्टिसे अिस सवालमें रस लेते हैं, तो अुन्हें वर्ग-संघर्ष बढ़ानेवाले मानकर अुनके सामने 'किसी न किसी तरह' विरोधका भारी तूफान खड़ा कर दिया जाता है। यह साफ है कि अिससे हालत ज्यादा ज्यादा बिगड़ती जा रही है।

सूरत जिलेमें अैसे मजदूर ज्यादातर 'हाळी' के रूपमें काम करते हैं। अुनके साथ लड़ाअीके दिनोंसे पहले जिस तरहकी नीति बरती जाती थी और अुन्हें जो मजदूरी दी जाती थी, वही आज भी चालू है। यह वर्ग जड़का-सा जीवन बिताता है यानी वह किसी तरह भी जाग्रत नहीं है। अिसलिअे अुसके हकों या मँहगाअी-भत्तेकी तरफ किसीका ध्यान भी नहीं जाता।

लड़ाअी और अुसके बादके कण्ट्रोलके जमानेमें अिस वर्गको किसानोंकी दयापर ही जीना पड़ा है। अब कण्ट्रोल हट गये हैं और अनाजके भाव अनाप-शनाप बढ़ते जा रहे हैं। अैसी हालतमें अुनके दुःखदर्दका पार नहीं है। जो मजदूर सख्त मेहनत करके और पसीना बहाकर फसल खड़ी करते हैं, अुन्हीं मजदूरोंको किसान ८ से १० रुपये या अिससे भी ज्यादा भावसे जुआर देते हैं। अिस तरह वे अेक पराधीन वर्गको ज्यादा पराधीन बनाकर अुससे फायदा अुठाते हैं। यह बड़े दुःखकी बात है।

जिन्होंने बरसोंसे किसानोंके साथ ही जुड़े रहकर काम किया है, अैसे अपने आदमियोंके तरफ भी अगर किसान अिन्सानियत न दिखावें, तो फिर दुनियाके क्या हाल होंगे?

हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधीके प्रतापसे हम कण्ट्रोलके जहरीले घेरेमें से छूट गये हैं। लेकिन अुन्होंने अनाज पैदा करनेवाले किसानोंको जो पवित्र और बुद्धिमानीकी सलाह दी, अुसे जान-बूझ कर ठुकराया गया है। किसानोंको अनाजके अुचित भाव मिलने चाहियें, लेकिन अुनकी कोअी हद तो होनी ही चाहिये। गांधीजीके दिलकी अिस अिच्छाकी तरफ मैं नम्रतासे किसानोंका ध्यान खींचना चाहता हूँ। किसानोंको अपने और देशके भलेके लिअे यह निर्णय करना चाहिये कि जो मजदूर निराधार हैं और जिनके सक्रिय सहकारसे हम रोटी पैदा करते हैं, अुनसे ६-७ रुपयेसे ज्यादा भाव न लेंगे।

जो अिससे ज्यादा भाव लेते हैं वे अन्याय करते हैं और देशद्रोही हैं, अैसा मानना चाहिये। अिसमें सबका भला है। वर्ना भाव बढ़ते ही जायँगे और अुनके पीछे दूसरे सवाल खड़े हो जायँगे; और जो भय देशके सामने खड़ा है, अुससे हम नहीं बच सकेंगे।

मैं फिर किसानोंसे नम्र बिनती करता हूँ कि वे अपने मजदूरोंको ६-७ रुपयेके भावसे अनाज देनेका नैतिक अुसूल मानें और अुसे पालें। आज भी कुछ जगहोंमें झूठे तोलसे अनाज देनेका या नकदी चार या साढ़े चार आने देनेका—यह रिवाज है अैसा कहकर—आग्रह रखा जाता है। यह तो मरे हुअेको मारने जैसी बात है। किसानोंसे मेरी नम्र बिनती है कि वे समयको पहचानकर गरीबोंके साथ बराबरी और अुदारतासे काम लें।

सरभन आश्रम, ३०-३-'४८

(गुजरातीसे) छोटुभाअी गोपालजी देसाअी
मंत्री, बारडोली तालुका हलपति महाजन

## राजघाटपर श्री विनोबाका भाषण

### (२)

[शुक्रवार ता० २-४-'४८ की शामकी प्रार्थनामें]

गांधीजीके स्मरणके निमित्त हर शुक्रवारके दिन हम लोगोंने प्रार्थना करनेका रिवाज रखा, यह अच्छा है। परमेश्वरकी प्रार्थनामें अपार शक्ति है। अुसके साथ गांधीजीके स्मरणकी शक्ति भी मिल जाती है, तो भावना दृढ़ हो जाती है। वैसे अीश्वरकी शक्ति अनन्त है। अुसमें हमारी तरफसे कुछ भी जोड़ देनेसे बढ़ावा होनेवाला नहीं है। फिर भी हम लोगोंके लिअे जहाँ दोनों शक्तियाँ अिकट्ठी होती हैं, वहाँ कुछ विशेष अनुभूति आती है। अभी बोलते बोलते मुझे गीताका अन्तिम श्लोक याद आया, जिसमें कहा है: "जहाँ भगवान है और जहाँ भक्त है, वहाँ सब कुछ है।" वैसे तो जहाँ भगवान है, वहीं सब कुछ है। लेकिन भगवानको तो हमने आँखसे देखा नहीं है। भक्तको हम देख सकते हैं। अिसलिअे हमारी निगाहमें भक्तकी महिमा ही बढ़ जाती है। समुद्रका पानी भाप बनकर बादलोंमें जाता है, और वहाँसे हमें मिलता है। पर हमारे लिअे तो बादल ही समुद्रसे बढ़कर हैं। समुद्रको दिल्लीवाले क्या जानें? वे तो बादलका ही अुपकार समझेंगे। तुलसीदासजीने लिखा है न —'राम ते अधिक रामके दासा'? लेकिन यह तुलना हम छोड़ दें। हमारी दृष्टिसे अिस प्रार्थनामें दोनों शक्तियाँ अेकत्र हो गअी हैं। भक्तिपूर्वक, बिना चूके, धन्धों आदिका सब विचार अेक तरफ रखकर हम अुस प्रार्थनामें साथ दें, तो सारे जीवनमें परिवर्तन हो जायगा।

कुरानमें अेक सुन्दर प्रसंग है। मुहम्मद पैगम्बर ताजिरोंके साथ बात कर रहे हैं। वे अुनसे कहते हैं: "आप लोग रोज अपने धन्धोंमें लगे रहते हैं। लेकिन हफ्तेमें कमसे कम अेक दिन तो अपने धन्धोंको छोड़कर भगवानकी शरणमें आअिये। अुससे आपकी तिजारत भी अच्छी चलेगी।"

शरीरकी शक्ति कायम रखनेके लिअे हमें रोज खाना पड़ता है। आत्माके लिअे तो २४ घंटे प्रार्थनाकी जरूरत है। जो वैसी प्रार्थना करते हैं, वे महान हैं। अुतनी योग्यता जिनमें नहीं है, वे दिनका कुछ समय तो प्रार्थनाके लिअे निकालें, और कमसे कम हफ्तेमें अेक दिन तो प्रार्थनाके लिअे अिकट्ठे हो जायँ! भगवानकी प्रार्थनामें सारे भेदोंको भूल जानेका अभ्यास हो जाता है। यह तो हमारी बदकिस्मती है कि प्रार्थनाके कारण भी भेद बढ़ जाते हैं। अेक पंथवालेको दूसरेकी प्रार्थनाके शब्द सहन नहीं होते। जहाँ अहंकार आता है, वहाँ अच्छी चीज भी बिगड़ जाती है। भगवानके सामने हम खड़े हो जाते हैं, तो सब समान, सब शून्य हो जाने चाहियें। वहाँ कोअी ज्ञानी नहीं, कोअी अज्ञानी नहीं; कोअी श्रीमान नहीं, कोअी गरीब

www.vinoba.in

नहीं; कोअी ऊंच नहीं, कोअी नीच नहीं। रातमें चन्द्र, तारे आदि भेद चाहे दिखाअी दें, लेकिन सूरज निकलनेपर सब साफ हो जाते हैं।

अिसलिअे आप अपने दूसरे कार्यक्रमोंको प्रार्थनाका खयाल रखकर जमा लें और अिस सामुदायिक प्रार्थनामें नम्र भावसे दाखिल हो जायँ। अिस तरह खयाल रखेंगे, तो अपवाद करनेका भी प्रसंग कम आयेगा। विवेककी जरूरत तो हर हालतमें रहती ही है। किसी कारण हम प्रार्थनामें हाजिर न रह सकें, तो जहाँ हों वहीं अुस समय प्रार्थनाकी भावना रखें।

## शान्ति और स्वतंत्र विश्व-व्यवस्थाका रास्ता *

हम संकटोंके युगमें रहते हैं। अेक संकटके बाद दूसरा संकट आता है। और जब किसी तरहकी शान्ति भी रहती है, तो अुस शान्तिके साथ लड़ाअीका और लड़ाअीकी तैयारीका डर बना रहता है। दुःखी और पीड़ित मनुष्य-जाति सच्ची शान्तिकी भूखी है, लेकिन कोअी न कोअी बदकिस्मती अुसके पीछे पड़ जाती है और अुसे सच्ची शान्तिसे ज्यादा और ज्यादा दूर ढकेल देती है। करीब करीब अैसा दिखाअी देता है कि कोअी भयानक किस्मत मनुष्य-जातिको बार बार होनेवाली बरबादीकी ओर ले जाती है। हम सब पुराने अितिहासके जालमें फँसे हुअे हैं और पुरानी बुराअीके नतीजोंसे नहीं बच सकते।

जो बहुतसे राजनीतिक और आर्थिक संकट हमारे सामने मुँह बाये खड़े हैं, अुनमें सबसे बड़ा संकट शायद मानव-भावनाका है। जब तक यह संकट दूर नहीं होता, तब तक हमें पीड़ा पहुँचानेवाले दूसरे संकटोंका हल खोजना मुश्किल है।

हम विश्वकी सरकार और अेक विश्वकी बातें करते हैं और लाखों-करोड़ों लोग अिसकी खाहिश रखते हैं। मनुष्य-जातिके अिस आदर्शको पानेके लिअे लोग सच्ची कोशिश करत रहते हैं, क्योंकि आज वह बहुत जरूरी हो गया है। और फिर भी आज तक वे कोशिशें सफल नहीं हुअी हैं, हालाँकि यह बात ज्यादा ज्यादा साफ होती जाती है कि अगर विश्व-व्यवस्था कायम नहीं हुअी, तो संभव है कि दुनियामें किसी तरहकी व्यवस्था ही न रह जाय। लड़ाअियाँ लड़ी जाती हैं और जीती या हारी जाती हैं, और जीतनेवालोंका करीब करीब अुतना ही नुकसान होता है, जितना कि हारनेवालोंका। सचमुच आजके युगकी सबसे महत्त्वपूर्ण शान्तिकी समस्याको हल करनेमें कोअी न कोअी गलती, कोअी न कोअी कमी जरूर है।

### गांधीजीकी देन

हिन्दुस्तानमें पिछले २५–३० बरसोंमें महात्मा गांधीने सत्य और अहिंसाके अुसूलोंके रूपमें हिन्दुस्तानकी आज़ादीके लिअे ही नहीं बल्कि दुनियाकी शान्तिके लिअे भी अेक अनोखी देन दी है। अुन्होंने हमें अहिंसाका जो अुसूल सिखाया, वह बुराअीके सामने लाचार बनकर झुक जानेका अुसूल नहीं है। वह तो अन्तरराष्ट्रीय मतभेदोंको शान्तिपूर्ण ढंगसे मिटानेका सक्रिय और पुरअसर साधन है। गांधीजीने हमें यह दिखाया कि मनुष्यकी आत्मा बड़ेसे बड़े हथियारोंसे भी ज्यादा ताकतवर है।

अुन्होंने राजनीतिक कामोंमें नैतिकताको दाखिल किया और यह बताया कि साधन और साध्य या मकसद कभी अलग नहीं किये जा सकते, क्योंकि आखिरकार साधनका असर साध्यपर पड़ता ही है। अगर साधन बुरा है, तो साध्य खुद बिगड़ जाता है और कमसे कम कुछ हद तक बुरा हो जाता है। अन्यायपर टिका हुआ कोअी समाज जब तक अिस बुराअीको नहीं छोड़ता, तब तक अुसमें लड़ाअी-झगड़े और पतनके बीज जरूर रहेंगे।

संभव है कि आजकी दुनियामें, जो पुराने संकुचित दायरेमें सोचनेकी आदी है, यह सब अनोखा और अव्यवहारिक मालूम दे। फिर भी हमने दूसरे तरीकोंकी बार बार नाकामयाबी देखी है। और, जो तरीका बार बार नाकामयाब हुआ है, अुसीके पीछे चलनेसे बढ़कर अव्यवहारिकता दूसरी क्या हो सकती है?

हम शायद मनुष्य-स्वभावकी आजकी सीमाओंकी अुपेक्षा नहीं कर सकते, या राजनीतिज्ञोंके सामने खड़े बिलकुल पासके खतरोंकी ओरसे आँख नहीं मूँद सकते। आजकी बनी दुनियामें हम लड़ाअीको भी पूरी तरह असंभव नहीं मान सकते। लेकिन मुझे अिस बातपर ज्यादा ज्यादा विश्वास होता जा रहा है कि जब तक हम राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय सम्बन्धोंमें नैतिक नियमकी प्रधानता नहीं मानते, तब तक दुनियामें स्थायी शान्ति नहीं हो सकती।

जब तक हम शुद्ध साधनोंका आग्रह नहीं रखते, तब तक साध्य या मकसद शुद्ध नहीं होगा और अुसमें से नअी बुराअी पैदा होगी। यह गांधीजीके सन्देशका निचोड़ था और मनुष्य-जातिको साफ तौरसे देखने और काम करनेके लिअे अिस सन्देशकी कदर करनी होगी। जब आँखें गुस्सेसे लाल हो जाती हैं, तो दृष्टि सीमित हो जाती है।

### विश्व-सरकार

मुझे अिस बारेमें कोअी शक नहीं कि विश्व-सरकार कायम होनी चाहिये और होगी, क्योंकि अिसके सिवा दुनियाकी बीमारीका दूसरा कोअी अिलाज नहीं। अुसके तंत्रकी रचना कठिन नहीं है। अुसके लिअे संघके सिद्धान्तका विकास या संयुक्त राष्ट्र-संघके मूलमें रहे विचारका विकास करना होगा, जिसमें हरअेक राष्ट्रीय अिकाअीको योग्यताके मुताबिक अपना भविष्य बनानेकी आज़ादी रहे, लेकिन वह विश्व-सरकारके बुनियादी कानूनसे बाहर न जाय।

हम व्यक्तियों और राष्ट्रोंके हकोंकी बातें करते हैं। लेकिन यह याद रखना चाहिये कि हर अेक हकके साथ फर्ज़ भी जुड़ा होता है। दुनियामें हकोंपर जरूरतसे ज्यादा जोर दिया गया है और फर्ज़ोंपर कमसे कम। अगर फर्ज़ अदा किये जायँ, तो हक कुदरती तौरपर अुनसे निकलेंगे। अिसका मतलब जीवनको अैसी दृष्टिसे देखना है, जो आजकी होड़ और हड़पनेकी दृष्टिसे भिन्न है।

आज डर हम सबको खाये जा रहा है — भविष्यका डर, लड़ाअीका डर, अुन लोगों या राष्ट्रोंका डर जिनसे हम नफरत करते हैं और जो हमसे नफरत करते हैं। यह डर कुछ हद तक ठीक माना जा सकता है। लेकिन डर बुरी और हलकी चीज है, जो अन्धी लड़ाअी और संघर्षको जन्म देता है। हम अिस डरसे छूटनेकी कोशिश करें और जो कुछ सही और संभव नैतिक है, अुसीके आधार पर विचार और काम करें। तब धीरे धीरे मानवकी भावनाका संकट दूर होगा, हमें चारों तरफसे घेरने वाले बादल हटेंगे और आज़ादीपर टिकी हुअी विश्व-व्यवस्थाके विकासका रास्ता साफ होगा।

(अंग्रेजीसे)

* ४ अप्रैल, १९४८की रातको अमेरिकाकी चिकागो युनिवर्सिटीके गोलमेज रेडियो प्रोग्राममें शामिल होनेके लिअे पंडित जवाहरलाल नेहरूका ऑल अिण्डिया रेडियोपर दिया हुआ भाषण।

### विषय-सूची


| | | | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| विज्ञापनमें अशिष्टता | ... | कि० मशरूवाला | ६९ |
| गांधी-स्मारक-निधिकी रसीदें | ... | कि० मशरूवाला | ६९ |
| धर्मकी भाषा | ... | विनोबा | ७० |
| गोधराकी पुकार | ... | कि० मशरूवाला | ७१ |
| साधन-शुद्धिपर जोर | ... | कि० मशरूवाला | ७२ |
| 'आखिरी मंत्र' | ... | प्यारेलाल | ७३ |
| हिन्दुस्तानीके बारेमें सफाअी | ... | काका कालेलकर | ७३ |
| हिन्दुस्तानी-प्रचार-सभा, वर्धा | ... | अमृतलाल नाणावटी | ७४ |
| पूर्व पंजाबमें विनोबा | ... | विनोबा | ७४ |
| किसान और खेतोंमें काम करनेवाले मजदूर | ... | छोटुभाअी देसाअी | ७५ |
| राजघाटपर श्री विनोबाका भाषण — २ | ... | विनोबा | ७५ |
| शान्ति और स्वतंत्र विश्व-व्यवस्थाका रास्ता | ... | | ७६ |


www.vinoba.in